लेखक के संकलन ''चुनिंदा कानूनी अभिलेख'' से कुछ परिचयात्मक शब्द जिसमें विभिन्न देशों के कानूनी नागरिक विधि, सिद्धांत और आर्थिक ज्ञान के मध्य समन्वय की जरूरत को उचित दर्शाया गया है।

1. इन दिनों लगभग सभी विशेषज्ञ आज को सामान्य प्रणाली में एक प्रगतिशील आर्थिक संकट जो कि संयुक्त राष्ट्र में पैदा हुई और विभिन्न देशों की सारी अर्थव्यवस्था में फैल गई है उसको पहचान लिया गया है।[1]

वर्तमान स्थिति दर्शाते हैं कि यह संकट पिछले 1929 वाले आर्थिक संकट से बड़ी हो सकती है और काफी लम्बे समय तक रह सकती है। पिछले दिनों के दौरान इन निराशावादी उम्मीदों ने जी–7 को एक आपातकालीन बैठक बुलाने को मजबूर कर दिया। हमारे बैंक ऑफ इटली के अध्यक्ष **प्रो.**

[1] आज की आर्थिक मंदी का यह विश्लेषण और रोजगार संभावनाएं प्स ैवसम 24 व्तम नामक आर्थिक समाचार पत्र छपे लेख 8–12/04/2008 'संचार के सामान्य माध्यम' के अनुरूप है।

मारियो द्रागी ने 70 चरणों में विशेष उपायों की धोषणा की जिसे तत्काल रूप से लागू किया गया है।

इस संकट के एक अभिव्यक्ति में अंतर्राष्ट्रीय बैंक प्रणालियाँ, यहाँ तक कि वो देश भी शामिल है जैसा कि स्विट्जरलैंड राज्यसंघ जो कि बचत परीक्षण के नकारात्मक स्पर्धाओं से दूर माना जाता है। यहाँ तक कि उसके सबसे महत्त्वपूर्ण बैंकों जैसे यूनियन ऑफ स्विस बैंक और क्रेडिट स्विस भी गंभीर परिस्थितियों से अछूता नहीं रहा है और जहाँ तक अंग्रेजी देशों का संबंध है इस संकट के बारे में "बीयर स्टीमिस" बैंक समूह को भी सूचित कर दिया गया है।[2]

---

[2] ब्वततपमतम कमससं ैमतं (28.3.08), प्स ैवसम 24 व्तम ;29.03.08द्ध आदि उनमें से कुछ हैं। प्स ैवसम 24 व्तम के अनुसार (पन्ना 25, दिनांक 10/04/08), न्ठै की लगभग 40 मिलियन यूरो की हानि हुई, 8000 से अधिक कर्मचारियों का इस्तीफा साथ ही साथ अध्यक्ष का इस्तीफा भी। ब्तमकपज ैपे की हानि 25 मिलियन यूरो आंकी गई। ब्वततपमतम कमससं ैतम (12/04/08)

मुझे लिखते समय ऐसा लगता है कि जैसे स्विस महासंघ के इस संकट को शेयरधारियों द्वारा समर्थित प्रधान मूल्यांकन वृद्धि से पराजित किया जा सकता है। इस परिस्थिति का कारण, मेरे विचार से आर्थिक प्रणालियों का भूमंडलीकरण है जो कि एक बड़े पैमाने की खोज में, सम्मिलित एवं निगमीकरण प्रक्रिया को शामिल किया गया है, जिसका मूल उद्देश्य साधारण लागत एवं कर्मचारियों को घटाना है जिसके परिणामस्वरूप आर्थिक

को भी देखें। इन दोनों समाचार पत्रों में ऐसे लेख छपे हैं जो अर्थशास्त्र के विषय से संबंधित हैं और इस साल 12 सर्वाधिक महत्वपूर्ण यूरोपीय बैंकों को होने वाली हानि के आंकड़े बताते हैं कि हानि अनुमानत: 1,24,345 मिलियन यूरो की है। यह हानि 2,40,000 बिलियन इतालवी लीरा के बराबर है। (Il Corriere della Sera, 7/7/08) प्रत्येक 12 बैंक के लिए हानि इस प्रकार है (मिलियन यूरो)

UBS = 37.080, Rbs = 17.673, Soc. Gen = 13-506, Cr. Suisse= 9.845, Deutsche = 9.191, Barclays= 8.158, Cred. Agr. 7.428, Hbos = 7.088, Fortis = 6.056, HSBC= 4.734, Natixis= 3.587, Bnp = 2.157

लाभ को बढ़ाया जा सके। यह विशालात्मकता की दौड़ सहवर्ती आर्थिक मंदी से ठंडी होती प्रतीत हो रही है।

इस भूमंडलीकरण की प्रक्रिया के कारण बहुत ही गंभीर परिणाम उत्कृष्ट हुए हैं जिसने कई सीधे संबंधों को शिथिल कर दिया है जैसे कि प्रोत्साहन और नियंत्रण दोनों का प्रबंधकों के बीच कर्मचारियों और ग्राहकों के बीच जैसा कि छोटे बैंकों में हुआ करता था। व्यवसाय फलता–फूलता है जब उसका मालिक उसपर नजर रखता है और पुराने कहावत को नकारते हुए कि . .....

यहाँ तक कि शेयरधारकों का नियंत्रण मुख्य रूप से बढ़ती हुई शेयरधारणों जो कि निवेश के कारण घटाया गया है जो कि पूर्ण रूप से अनाम और अक्सर ऋण में संलग्न होते हैं। और यहाँ तक कि ''निधि निवेश'' ने व्यवस्थापकों के चुनाव, बजट नियंत्रण और संस्थान को सामान्य उन्नति के बारे में छोटे शेयरधारकों की भूमिका और संपर्कों की जगह ले ली है।

संकट की शुरूआत कुछ समय पहले संयुक्त राष्ट्र में हुई, जैसा कि हमने ऊपर दर्शाया है, पूरे विश्व के अन्य देशों की अर्थव्यवस्था जैसे चीन और भारत संक्रमित हुए हैं और ऐसा लगता है उनके अर्थव्यवस्था के विकास की शुरूआत एवं उनकी उत्पादक बढ़ोतरी पर रोक लग गई है।

हमारे देश में ''लोकप्रिय बैंकों'' ने विधि द्वारा अलग किये गये, व्यक्तिगत शेयरधारण को एक परमसीमा द्वारा अलग किये हुए कुछ राजनीतिक सदस्यों के कानून–बाधित सहकारी विधानों को संशोधित करने के प्रयत्नों का विरोध किया। यह प्रयत्न सौभाग्यपूर्वक विफल रहा।[3]

2. आगे एक परिवर्तन मुद्रास्फीतिक घटना पर प्रकाश डालती है जिसने मुद्रा के मूल्य को कम किया। मुद्रा स्फीतिक प्रक्रिया

---

[3] बेनवेनूतो की बैठक में बनाये गये संसदीय कमीटी ने सरकारी ऋण समितियों के ऋण कानून में परिवर्तन लाने के प्रयास के संदर्भ में।

के परिणामों को देखते हुए सिद्धांत और विधिशास्त्र ने शुरूआत में पैसे के पुनर्मूल्यन के उपाय पर विचार किया।[4]

इस घटना का अनुसरण आज के समय ने किया है जिसमें हम अभी जी रहे हैं। कहा जाय तो मुद्रास्फीति जनित मंदी, जो मुद्रास्फीति से और उसके परिणामस्वरूप होने वाले अचल और पुराने मूल्यों के हनन से मिलता है, जो कि मंदी के साथ संपत्ति और सेवाओं की माँग में कमी की वजह से होने वाले मूल्यों में गिराव के कारण आता है।

---

[4] ''मेरे चुनिंदा कानूनी अभिलेख'' जो विस्तृत रूप में हैं। इटली में हाल के कुछ वर्षों में, यूरो पर छाई मुद्रास्फीति 2.5 प्रतिशत और 3.3 प्रतिशत के बीच बदलती रही और वैधानिक ब्याज 3 प्रतिशत रहा। यह कहा जा सकता है कि हमारे देश के यूरोपीय समूह में शामिल होने से ''बंसं उवइसमश, (जिसने मुद्रास्फीति से कर्मचारियों को राहत पहुंचाया) को समाप्त कर दिया गया।

इस मुद्रास्फीतिक जनित मंदी के समय में, मुद्रा के पुनम्र्ल्यन से होने वाले उपाय को इटली में संयुक्त प्रभागों द्वारा उच्चतम न्यायालय के विधान पर छोड़ दिया गया है।[5]

(नागरिक केस, संयुक्त प्रभाग 4/7/1979 3376 य ना.के., सं.प्र. 25/10/1979 नं. 5578, विधान के बाद इस पंक्ति का पालन करेगा।)

पहले दिखाये गये उपाय को महत्वपूर्ण न्यायकारों का समर्थन हासिल था। देखें ''चुनिंदा न्यायिक अभिलेख''

3. ''मुद्रा'' के कुछ महत्वपूर्ण पक्षों पर विचार करना चाहिए। यह आदान-प्रदान के योग्य है जो कि इसकी नाम-मूल्यता की अवधारणा से समर्थित है, और यह ब्याज देती है।[6]

---

[5] ये सभी 'मुद्रा' और 'मौद्रिक बाध्यता की विशेषताएं हैं। इटली में 'निम्न मूल्य' की संकल्पना और इसकी ब्याजयुक्त विशेषता एवं चिर योग्यता को ।तजण 1218 द्वारा तय किया जाता है। वैधानिक कोड द्वारा इसकी चिरभोग्यता सर्वविदित है।

अधिकांशत: हानि की भरपाई के आवश्यकताओं पर प्रकाश डाला है जो कह सकते हैं कि ..... सीधे और तुरन्त कारणीकरण इसकी दूरदर्शिता, इसकी बचात्मकता और आर्थिक मौद्रिक समस्याओं के बीच सम्बन्ध जो कि अवमूल्यन के कारण मुद्रास्फीति में बढ़ाव के समस्याओं से सम्बन्धित है। भूतकाल में यह सिद्धांतों और विधानों में बहुत प्रचलित है और जिसका अस्तित्व आज भी प्रचलित है जिसे सम्पत्ति और सेवाओं के माँग में गिराव और मूल्यों पर इसके परिणाम को देख जा सकता है। लेखक ने दृढ़तापूर्वक यह व्यक्त किया है कि नामधारी विचार होने के कारण यह प्रस्ताव योग्य और माननीय संस्तुति नहीं है।

मौद्रिक ब्याज के बारे में लेखक ने टिप्पणी की है कि साधारणत: सभी विविध कानून अपनी इकाईयों की स्थापना

---

[6] बचत खाते एवं ऋण दर में सामान्य रूप से विभिन्न बैंकिंग सेक्टरों में स्थिरता देखी जा सकती है। इटली में वसूली की औसत दर 2.50 प्रतिशत है जबकि ऋण दर 9.88 प्रतिशत है।

न्यायिक ब्याज से अमुक होकर करते हैं। ये न्यायिक ब्याज दरें, अनुभव से, कुछ आपातकालीन अपवादों के अलावा सामान्यत: ''बाजार पर आधारित दरों'' से कम होती है। जिसे प्रतिदिन लागू किया जाता है और उसकी सूचना समाचार–पत्रों विशेषकर आर्थिक पत्रों से चलता रहता है।

जिसका थोड़ा भी बैंक व्यवस्था से वास्ता है वह निश्चित ही जानता है कि दो तरह के ब्याज होते हैं जो कि मुद्रा की आदान–प्रदान होने की योग्यता की आवश्यकता से सहधर्मिता रखते हैं और उसे संतुष्ट करते हैं, दोनों तरह से एक उपभोक्ता अपने स्रोतों का उपयोग करता है, हानि के और परिणामों से या इसके एक बड़ी हानि में बदलने से बचने के लिए वह बैंक ऋण का सहारा लेता है।

पहली तरह के ब्याज वे हैं जो बैंक व्यवस्था में ''संग्रहण ब्याज'' के नाम से जाने जाते हैं, जो बैंक साधारणत: अपना संग्रहण बढ़ाने के लिए अपने उपभोक्ताओं को देते हैं और दूसरी तरह के ब्याज वे हैं जिन्हें ''उपभोग'' ब्याज कहते हैं, जो

उपभोक्ता बैंक को ऋण लेने पर देते हैं जो मुद्रा की उपलब्धता की कमी का विकल्प देते हैं, और जिसे हम वैकल्पिक मूल्य कहते हैं।[7]

धारा 1224 प्रथम कॉमा, नागरिक संहिता में इतालवी कानूनों न्यायिक ब्याज दरों को स्थापित करना है, जिसके अंतर्गत ब्याज की दर को 1 जनवरी 2008 से 3: किया गया है जो कि कुछ समय पहले तक 5: तक संतुलित था। इतालवी नागरिक संहिता का दूसरा कॉमा, ''वृहत्तर हानि'' की क्षतिपूर्ति उपलब्ध कराता है, अर्थात् मुद्रा के वित्तीय ब्याज और न्यायिक ब्याज द्वारा प्रदत्त

[7] इतालवी सिविल कोर्ट (नागरिक संहिता) के ।तजण 1224 न केवल बैंकों के हित में क्षतिपूर्ति के लक्ष्य का पता लगाती है बल्कि पैरा–2 में क्षतिपूर्ति की बाध्यता का भी पूर्ण रूप से वर्णन करता है। इसी पर मेरा लेख **चुनिंदा विधि लेख** पन्ना–163–164 जो केवल बाजार के ब्याज दर एवं जो पहले से ही नैतिक दर द्वारा सम्मिलित की जा चुकी है, उन सभी की पहचान एवं स्थिरता पर प्रकाश डालता है।

भाग का अंतर। ऋणी के द्वारा उठायी गई अतिरिक्त क्षति न्यायिक दरों में नहीं जोड़ी जा सकती है, परन्तु यह ''वृहत्तर हानि'' द्वारा पूरित की जा सकती है, जो कि ब्याज दर और आर्थिक दर के अंतर के समान है। यह बहुविदित है कि सभी विधित कानून (अति ब्याजी ऋण) से सहमत नहीं होता, जिसके साथ क्षतिपूर्ति ऋणी का धनवर्धन सामान्य आधार से कहीं अधिक रूप से करती है।

ये कई विविध कानूनों में यह बहुविदित है कि ''वर्धवर्धन वर्जन अवैध'' है जो कि ब्याज के ऊपर ब्याज का गुणा करने से रोकता है।

मुद्रा का पुनर्मूल्यन उन विद्वानों द्वारा समर्थित है जो कि मुद्रा के अवमूल्यन का उसके पुनर्मूल्य द्वारा हल करने हेतु स्थूल–आर्थिक विधि का पालन करते हैं, शीघ्र ही सिद्धांत और विधान दोनों ने ही पुनर्मूल्य विधि को नकार दिया और समष्टि आर्थिक रूप से भी इसको नकार दिया गया है। इसके अतिरिक्त, मुद्रा का पुनर्मूल्यन मुद्रा के नामधारी मूल्य का भी

हनन करता है, क्योंकि यह ऋणी को आर्थिक चरण में एक अवैध लाभ देता है, विशेषतः वर्तमान में, जब कि मुद्रास्फीति और मंदी दोनों एक साथ अस्तित्व में होते हैं।

यह उपभोग्य वस्तुओं और सेवाओं में कमी और उनके मूल्यों में गिरावट द्वारा पहचाना जाता है।

इस मुद्रास्फीतिजनित मंदी के समय में आर्थिक मंदी के परिणामतः होने वाली माँग की कमी के कारण अपने पुराने मूल्यों पर अपने क्रयक्षमता के अनसार नहीं पहुँच पाती है और वह साधारणतः मूल देय राशि और अनुगत मुद्रास्फीति के दर के नीचे ही रह जाती है।

अधिकतर विद्वानों के अनुसार यही आर्थिक स्थिति भविष्य में भी बनी रहेगी जिसमें हम सभी जीवनयापन करने वाले हैं। कुछ दशक पहले यूरोप में समष्टि आर्थिक विधि का उपयोग मुद्रा पुनर्मूल्यन के आधार पर होता था, मुद्रा के नामधारी होने की अवधारणा के बावजूद, जिस पर वह आधारित है।

4. लगभग 50 वर्ष पूर्व संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में एक सूक्ष्म–आर्थिक विधि प्रकाश में आयी। मुद्रा के निवेश से एक काल्पनिक और संभावित गैर–लाभ जो कि लेनदार ले सकता था उसे दर्शाता है। इस धारणा को शिकागो के प्रमुख अर्थशास्त्रियों का निरन्तर समर्थन मिला। अपनी गहन अध्ययन और न्यायशास्त्र के आर्थिक विश्लेषण की शिक्षा प्रदान करने में सबसे अधिक इटली के **प्रो. रोवेर्तो पारदोलेजी** जो इकलौते इतालवी प्रोफेसर हैं और वो इन दिनों **रोम के लुइस विश्वविद्यालय** में कार्यरत हैं।[8]

सूक्ष्म आर्थिक अभिविन्यास ने ना सिर्फ राजस्व मुद्रा की संभावना को अलग किया है बल्कि मेरे विचार में वांछित सपाट निष्कर्षो को भी व्यक्तिगत रूप से लेनदार की क्षति की शिकायत की आवश्यकता है, जो कि काल्पनिक संरूपण पर

[8] शिकागो स्कूल के सर्वाधिक प्रसिद्ध लेखक : मिल्टन फ्रेडमैन ''पद्धति, खपत और पैसा'' इल मूलीनो, 1996 और डेबिड फ्रेडमैन ''कानून और व्यवस्था'' इल मूलीनो 2004 (पाठ 1,6,8,9,11,16)

आधारित होना चाहिए और चरित्र एवं साधारण शिष्टाचार के आधार पर न हो जैसा कि इसके शर्तों के आधार पर ब्याज के बचाव के नियम और उनके परिणामों को सहमति देते हैं।

प्राचीन रोमन कानून में निहित सिद्धांत और न्यायशास्त्र को पढ़ते हुए और उसकी तुलना वर्तमान कानून से करते हुए यह पता चलता है कि आर्थिक ज्ञान अभी बहुत दूर है और वो आपस में मेल नहीं खाते।

न्यायिक विचारों के इतिहास में कुछ समय पहले से ही कर्तव्यहीनता और अपराध की भौतिक परिणामों द्वारा पहचाना गया है, ठीक वैसे ही जैसे कर्तव्यहीनता या अदृश्य अपराध जो कि वास्तविक रूप से अस्तित्व में नहीं भी हो सकता है।

इसके विपरीत कर्तव्यहीनता के बारे में, घटना की पहचान ''क्षति'' के द्वारा की जानी चाहिए, यह एक आर्थिक विचार है और इसे किसी भौतिक घटना के साथ नहीं पहचाना जा सकता है।[9]

9

जैसा कि विधि विद्वानों और न्यायाधीशों ने सोचा कि लेनदेन से होने वाले हानि को अनूठा माना गया है क्योंकि ये प्रस्तावित वैध माँग या फिर उसके निर्णित हर्जाना को छोड़ने पर भी लेनदार को सहन करना पड़ता है।

लेखक ने दो विभिन्न प्रकार की क्षतियों में अंतर करने पर जोर दिया है : एक तो वह जो कर्तव्यहीनता या अपराध से आती है और जिसका अनुमान उसके होने से होना चाहिए, और दूसरी यह जो क्षतिपूर्ति में विलम्ब से आती है।[10]

अतः ये दो प्रकार की क्षतियाँ हैं। विलम्ब के लिए क्षति की पूर्ति आंशिक तौर पर न्यायिक ब्याज द्वारा पहले ही हो चुकी है, और ये विलंबजनित क्षति को समाप्त कर देता है। जो

[10] जो क्षति गैर अदायगी से अथवा अनैतिकता से एवं विलंबजनित क्षति के उपयुक्त आबंटन के संबंध पर ; जिसकी पूर्ति वैधानिक ब्याज दर से होती है; जिसमें अधिक से अधिक क्षति का भाग किया जाता है (विधि लेख, पन्ना–151)

अलग तरह से सोचता है और इसका ध्यान नहीं रखता, वह क्षतिपूर्ति को दोगुना कर देता है।

अधिकांश क्षति की पहचान न्यायिक ब्याज द्वारा पूरित हानि के सापेक्ष वृहत्तर ब्याज द्वारा की जानी चाहिए, उदाहरणतः बैंक जमा के लिए वृहत्तर प्रतिस्थापन मूल्य होता है जो बैंक पूरित करता है।

जो कोई भी ब्याज द्वारा व्यक्तिगत रूप से पूरित क्षति के भाग को एकत्रित करता है, पुनर्मूल्य के साथ या काल्पनिक लाभ के साथ जो कि लेनदार मुद्रा के ब्याज देने वाले उपयोग से कमा सकता था, वह गलती करता है, क्योंकि नामधारी मूल्य द्वारा दिखाये गए विधि के सिद्धांत और आगे के पुनर्मूल्य को स्वीकार नहीं करते, ना ही वर्धवर्धन और ना ही सूदखोरी को।

5. लेखक सूक्ष्म आर्थिक विधि को संतोषप्रद नहीं मानता, जो कि संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में प्रचलित है, विशेषकर स्कूल ऑफ शिकागो में।

वह इस विधि को स्वीकार नहीं करती क्योंकि यह लेनदार की व्यक्तिगत लाभ के लिए एक सा है। व्यक्तिगत ब्याज–क्षति, विधि तंत्र के संरक्षण को पाने के लिए, विशिष्ट ब्याज के अनुरूप होनी चाहिए, विधितंत्र द्वारा निर्धारित किये गये साधारण और अमूर्त मामले के संसक्त होनी चाहिए।[11]

अन्य शब्दों में, सूक्ष्म–आर्थिक विधि को विधितंत्र से संरक्षण काफर्क नहीं पड़ता, परंतु तभी तक जब तक क्षतिग्रस्त ब्याज विशिष्ट या विशिष्टीकृत ब्याज के अनुरूप होता है, जो विधितंत्र द्वारा संरक्षित है।

व्यक्तिगत ब्याज को क्षति, (जो संरक्षित विशिष्ट ब्याज के अनुरूप नहीं होती), नहीं होती और इसे विधि द्वारा संरक्षण प्राप्त नहीं होता।

इस अर्थ में आर्थिक और न्यायिक ज्ञान एक दूसरे से सहमत होने चाहिए। लेखक सोचता है कि पारंपरिक न्यायिक

---

[11] इन तर्कों या विचारों के बारे में छपे 28 लेखों का संकलन है ''नागरिक दायित्व में मौद्रिक भाव और अन्य लेख'' जिसका प्रस्तावना आल्बेतो त्राबुक्की ने लिखी है। ''चुनिंदा विधि आलेख'' में प्रकाशित 13 अध्ययन पत्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं।

सिद्धांत एक महत्वपूर्ण संपूर्णता पा चुके हैं जो कि अमूर्त रूप से संकल्पनात्मक है और आर्थिक मामलों तथा अनुभव के समक्ष आर्थिक नियमों के संगत है।

कहने का अर्थ यह है कि इस संदर्भ में विधि और अर्थव्यवस्था अनुरूप होते हैं और एक दूसरे में एकीकृत हो जाते हैं। धारा 1224, द्वितीय कॉमा सी.सी. द्वारा क्षतिपूर्ति लायक मानी गयी विलंबजनित वृहत्तर हानि की बात करें तो इसे ''न्यायिक ब्याज में से वृहत्तर हानि'' समझना चाहिए, जो कि इसमें समाहित है।

एक बात और कि विधितंत्रों के अनुसार ब्याज के ऊपर ब्याज चढ़ाना वर्जित है–मुद्रा एक आदान–प्रदान योग्य चिरभोग्य वस्तु है बैंक से उधार लिया जा सकता है – और यह कि धारा 1224, द्वितीय कॉमा, सी.सी. का मतलब न्यायिक ब्याज और लेनदार की क्षतिपूर्ति का संचय नहीं समझा जा सकता, सकल और ना कि शुद्ध, वह न्यायिक ब्याज जो लेनदार प्राप्त करता है।

यह क्षतिपूर्ति वह नहीं है जो लेनदार व्यक्तिगत तौर पर देनदार से चाहता है, जो कि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हुई हे, बल्कि ये विशिष्ट ब्याज के अनुरूप होती है, उदाहरणतः बाजार ब्याज, न्यायिक ब्याज और बाजार ब्याज के अंतर द्वारा। अतः उस मामले में जबकि विधितंत्र निजी स्वायत्तता को अनुबंधन के भागों में शर्तों की स्वतंत्रता देता है, लेखक इस तथ्य को शामिल नहीं करता कि सूक्ष्म–आर्थिक विधि निवेदित संपत्ति द्वारा क्षतिपूर्ति के होने को औचित्य प्रदान करती है – देनदार के विरूद्ध लेनदार द्वारा क्षति, विधि आवश्यकताओं के बिना।

अतः ब्याज विधितंत्र द्वारा संरक्षित होना चाहिए निजी स्वत्व अधिकार से संबंधित निष्कर्षों की प्राप्ति सीमा की तरह। इस तरह से इसे एक विशिष्ट ब्याज, जो कि कानून द्वारा निर्धारित सीमाओं से अधिक नहीं होना चाहिए, का अप्रत्यक्ष संरक्षण बनाया गया है।

हानिग्रस्त ब्याज जो कि व्यक्ति द्वारा शिकायत किया गया, विशिष्ट ब्याज के अनुरूप होना चाहिए जो कि प्रत्यक्ष या

अप्रत्यक्ष रूप में कानून द्वारा संरक्षित होना चाहिए। कानून के अनुसार हानिग्रस्त ब्याज का संरक्षण तभी मान्य है जब इसका प्रत्यारवान विशिष्ट ब्याज के अनुरूप है।

यदि व्यक्तिगत ब्याज विधि के अनुसार अमूर्त रूप से विशिष्ट या विशिष्टीकृत ब्याज के अनुरूप नहीं होता है, तो वह इस तंत्र में मान्य नहीं होगा।

एक आर्थिक ब्याज विधितंत्र द्वारा संरक्षित नहीं किया जा सकता यदि यह विशिष्ट या विशिष्टकृत नहीं है और यह उस क्षतिपूर्ति द्वारा दोहराया नहीं जा सकता, जो सूदखोरी और वर्धवर्धन को निषिद्ध करने वाले नियमों में शामिल नहीं है।

निष्कर्ष के तौर पर लेखक दृढ़तापूर्वक इस बात पर जोर देता है कि न्यायिक सिद्धांत अपनी उच्च संपूर्णता में आर्थिक ज्ञान से, जो कि आम अनुभव के नियमों पर आधारित है, पूर्णतया एकीकृत हो सकता है। लेखक सोचता है कि एक गहन सांस्कृतिक नवीकरण होना चाहिए जो विधि और अर्थव्यवस्था को

एकीकृत करता है, ना कि उनकी घटनाओं के ज्ञान और न्यायिक एवं आर्थिक नियमों के बीच संगतता को।

विधि और अर्थव्यवस्था की विवादित समन्वयहीनता, जो कि न्यायिक मानकों से संबंधित है, और उनसे शासित है, जैसा कि हमने कहा, एक गंभीर सांस्कृतिक पिछड़ेपन का कारण है।

यह पिछड़ापन हमारे माध्यमिक विद्यालयों के कारण है और विश्वविद्यालय विधि संकायों के लिए विशेषकर सत्य है जिनकी शिक्षा सिर्फ शास्त्रीय संस्कृति पर आधारित है और अर्थशास्त्र की उपेक्षा करती है।

इस बात पर ज्यादा ध्यान दिया जाना चाहिए, जैसा कि हमारे लेखकों और महत्वपूर्ण यूरोपीय व इतालवी अधिकारी वर्ग माध्यमिक विद्यालयों में अर्थशास्त्र की शिक्षा जो थोड़े समय के लिए शिक्षण कार्यक्रमों का हिस्सा रही है जैसा कि अभी है, जैसा कि अभी फ्रांस जर्मनी और ब्रिटेन में है, इटली में अर्थशास्त्र और वित्त पूरी तरह उपेक्षित है, साधारण और काल्पनिक तरह से भी।

प्रायः यह आशा की जाती है कि इटली इस बड़े सांस्कृतिक विलंब से बाहर निकल सकता है और अग्रणी यूरोपीय देशों के बराबर आ सकता है जैसा कि ओ.ई.सी.डी. में सुझाया गया है (इस पर देखें, **'इल कोरियरे देल्ला सेरा'** (इटली की प्रमुख समाचार–पत्र) धारा 4.7.2008, शीर्षक **''अर्थशास्त्र और वित्त''** माध्यमिक विद्यालयों के पाठ्यक्रम में अनुग्रहीत किया गया है – यूरोप से अनुकूलन की योजनाएँ)

6. इन परिणामों को लेखक के अधिकांश लेखों द्वारा समर्थित किया गया है, जो कि दशकों से सबसे महत्वपूर्ण इतालवी न्यायिक समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए हैं, लेखक के अनुभव और न्यायार्थिक विचारों द्वारा जनित है।

लेखक यूरोप के सबसे महत्वपूर्ण सैद्धांतिक–न्यायिक शिक्षक **प्रो. एमिलियो बेत्ती** के शिष्य रह चुके हैं, उन दिनों में मिलान विश्वविद्यालय में रोमन विधि के व्याख्याता थे, तत्पश्चात् रोम में यूनिवर्सिटी ला सापिएंत्सा में नागरिक विधि के।

लेखक जब अपनी विधि अध्ययन की शिक्षा ले रहे थे, तब उन्होंने स्वयं को न्यायपालिका पेशे को समर्पित कर दिया, साथ ही उन्हें महत्वपूर्ण व अन्तर्राष्ट्रीय बैंकों में उच्च–स्तर का गौरव प्राप्त था, उदाहरणतः जेनेवा का **एडमंड रॉशिल्ड बैंक** (ग्राहक संपत्ति प्रबंधन विशेषज्ञ) जो कि **'यूरोपीय समूह'** के ऐतिहासिक परिवार का हिस्सा है। बाद में वह पेरिस के प्रचलित बैंक महासंघ के निदेशक मण्डल का हिस्सा थे, और इटली में मिलान के बांका पोपोलारे में निदेशक मण्डल, अधिशासी समितियों और उन आयोगों का हिस्सा थे जो ग्राहकों के उद्धार का विश्लेषण करते थे और ऋण अनुदानों का निर्णय करते थे, और तीस वर्षों के लिये वह बांका पोपोलारे दि लुईनो ए वारेज़ के प्रशासक और अध्यक्ष थे।

इस लम्बे समय के दौरान वह मुद्रा, उसके मूल्य, उसकी उत्पादनशीलता, उसके विशिष्ट आदान–प्रदान योग्यता के सापेक्ष, और न्यायिक सैद्धांतिक और मौद्रिक घटनाओं को बताने वाली समस्याओं और साधारणतः आर्थिक योजनाओं से संबंधित न्यायिक

अनुभव को सोचने में समर्थ थे। बैंकों में वो एक विशाल आर्थिक अनुभव को न्यायिक विचार ज्ञान से जोड़ने में, आगे की ओर पहुँचाने के लिए तथा आँकड़े अर्जन के ज्ञान को बढ़ाने और एक दूसरे को एकत्रित करने की जरूरत को विकसित करने में समर्थ थे।

उनके न्यायकर्ता और मौद्रिक तथा साधारणतः आर्थिक घटनाओं के चौकस पर्यवेक्षक के रूप में अपने शोध और सोच, विशेष रूप से मुद्रा की क्रय क्षमता में बदलाव से संबंधित है, मुद्रास्फीतिक अवथा में और आगे आने वाले क्रय क्षमता और माँग की कमी के सह–अस्तित्व में, जो कि आर्थिक मंदी से हुआ है, और जो कि वर्तमान और भविष्य में मौजूद है। – मुद्रास्फीति–जनित मंदी

इस समय, मौद्रिक पुनर्मूल्यन लेनदार को होने वाले तर्कहीन लाभ को शामिल करेगा, मुद्रास्फीति और मुद्रा की क्रयशक्ति में समायोजन की कमी के कारण, जो कि सम्पत्ति और सेवाओं की

माँग में कमी और उनके अलग मूल्यों के कारण है, मूल्य–सूची, जो कि मंदी से नकारात्मक तौर पर प्रभावित है।

लेखक के कई न्यायिक मामले जो कि न्यायिक आर्थिक समस्याओं से संबंधित विचारों के फल हैं, वो 1994 में सेदाम द्वारा संपादित भाग में संकलित हैं, जिसकी प्रस्तावना **अल्बेर्तो त्राबोक्की** ने दी है, जिसका शीर्षक **''चुनिंदा कानूनी अभिलेख''** और नागरिक दायित्व द्वारा **''मौद्रिक भाव''** है।[12]

1994 में सेदाम द्वारा संपादित एक और भाग में जिसकी प्रस्तावना उनके मित्र **एनरिको एलोरियो** ने लिखी है उनके कई प्रकाशनों का संकलन है, जो कई महत्त्वपूर्ण इतालवी पत्रिकाओं में छपे हैं, और जो संबंधित हैं नागरिक कार्यवाहियों से, और जो संबंधित करती है अनिवार्य निष्पादन में लेनदारों के सहापराधिकता और दिवालियापन कानून को, जिसकी संपादकीय

12

समिति का वह हिस्सा है जो प्रो. रागुसा माज्जोरे द्वारा गठित है, जिसके लिये लेखक उच्च सम्मान महसूस करते हैं।[13]

इतालवी गणराज्य की दसवीं विधायिका में सीनेटर चुने जाने के बाद लेखक ने कानून में विभिन्न बदलाव प्रस्तावित किये, जो कि नागरिक दायित्व, क्षति और साधारण आर्थिक घटनाओं से संबंधित थे और नागरिक परीक्षण कानून और दिवालियापन कानून से संबंधित थे।

लेखक ने इतालवी मंत्री समिति में भाग लिया, जो कि नागरिक कार्यवाही संहिता को संशोधित करने के लिए गठित हुई थी, जिसके अध्यक्ष प्रो. ताजिया थे, और लेखक न कानूनों में कई बदलाव प्रस्तावित किए।

7. कानून ने सांस्कृतिक पिछड़ेपन की बात कही है जो अर्थव्यवस्था की उपेक्षा करती है, हाल ही में राष्ट्रीय न्यायालयिक

---

[13] यह खंड ''वर्तमान समस्याएँ और नागरिक क्रिया के सुधार–विचार'' नागरिक जांच कानूनों से संबंधित 48 और दिवालियापन कानून के 13 लेखों से सुसज्जित है।

परिषद् को राजी किया, इतालवी विधि सलाहकार कार्यालय के शिखर पर, अपना कदम उठाने के लिए 13 जुलाई को नागरिक दायित्व की समस्याओं में न्यायिक संस्कृति के अभाव से संबंधित।

लेखक जहाँ उस पिछड़ेपन से उबरने के लिए राष्ट्रीय न्यायालयिक परिषद् की चिंताओं की सराहना करते हैं, वहीं उस कदम की वैधता को लेकर विकलित हैं क्योंकि राष्ट्रीय न्यायालयिक परिषद् के पास अनन्य दायित्ववादी सामर्थ्य है, परन्तु विधायी नहीं।[14]

उनका यह भी विचार है कि उपर्युक्त समस्या के बारे में एक काल्पनिक औचित्य है, व्यक्तिगत और प्राप्त अधिकारों की चर्चा के लिये, सार्वजनिक विश्वविद्यालय डिग्रियों के साथ, या पेशेवर योग्यता प्रमाणपत्रों के साथ, जो कि व्यक्तिगत तौर पर आयोजित और बढ़ावा दिये गए परीक्षणों द्वारा प्राप्त होते हैं।

---

[14] देखें, राष्ट्रीय न्यायिक काउंसिल का विचार पाठ्य'' लगातार उत्पत्ति नियम'' (अनुमोदित 13–7–02)

राष्ट्रीय न्यायालयिक परिषद् के इस उपाय में न्यायिक पेशे के प्रचालकों के अधिग्रहीत अधिकारों पर कोई संदेह नहीं है।

वह यह भी नहीं मानते हैं कि सांस्कृतिक समायोजन से इस उद्देश्य को प्राप्त कर सकता है। वास्तव में उपाय का अर्थ है ''प्रारंभिक बकायों'' की स्वैच्छिक प्राप्ति, जो कुछ घण्टों के लिए किसी व्याख्याता के द्वारा आयोजित किसी भी भीड़-भाड़ भरे सम्मेलन में भाग लेने से हो सकती है।

सब कुछ बिना किसी परीक्षा के राज्य-आयोग के सामने होता है और इसलिए यह एक आवश्यक मामला है वास्तव में विश्वविद्यालय डिग्रियों से और पेशेवर योग्यता की परीक्षाओं को उत्तीर्ण करके प्राप्त अधिकारों की चर्चा करने के लिए अनुपयुक्त है।

यह अपरिहार्य लगता है कि इस प्रकार का उपाय कम से कम राष्ट्रीय न्यायाधीश संघ द्वारा अपनाया जाए और न्यायाधीशों को प्रशिक्षित करने वाले पुनश्चर्या पाठ्यक्रम लागू हों, यद्यपि यह अत्यधिक विस्तृत नहीं है, जो कि विधि और अर्थशास्त्र के

संयोजन से प्रेरित है, और यह विशेषकर आवश्यक है जब हम विवादों का निर्णय करने में न्यायाधीशों की भूमिका पर विचार करते हं, विशेषकर नागरिक देयता के रूप में।

8. 2005 में लेखक ने ''**जुरिडिक स्टडीज़ फाऊंडेशन, वकील जोवानी वालकावी**'' की स्थापना की, जिसका लक्ष्य वारेजे, जहाँ वह रहते हैं, में कार्यरत वकीलों के लिए सांस्कृतिक योग्यता पाठ्यक्रमों को बढ़ावा देना था।

मार्च 2007 में उन्होंने दो इंटरनेट साइट आरंभ किए : **ूण्अंसबंअपण्पज** तथा **ूण्विदकंपवदमहपवअंददपअंसबंअपण्पज।** इन साइटों पर उन्होंने अपनी किताब का इतालवी पाट्य जिसका शीर्षक है ''**चुनिंदा कानूनी अभिलेख**'' जिसमें नागरिक दायित्व से संबंधित सबसे महत्वपूर्ण पत्रिकाओं में छपे उनके प्रकाशनों का संकलन है। जैसा कि पहले कहा गया **सेदाम** द्वारा 1994 में संपादित, शीर्षक ''**नागरिक दात्वि में मौद्रिक भाव**'' **प्रो. आलबेतो त्राबोक्की** की प्रस्तावना के साथ। इसके बाद लेखक ने इन साइटों में अपने आगे के प्रकाशन, जैसा कि पहले कहा गया,

सेदाम द्वारा संपादित भाग जिसका शीर्षक **''वर्तमान समस्याओं और नागरिक प्रक्रियाओं के सुधार विचार'' प्रो. एनरिको अलोरियो** के नागरिक परीक्षण कानून और दिवालियापन कानून से संबंधित प्रतावना के साथ।

इसके अलावा उन्होंने इसमें **''सार्वजनिक पेशेवर जीवन की स्मृतियाँ''** और **''विश्वविद्यालय जन्म का इतिहास''** नामक भाग भी शामिल किये, वारेजे में जो कि अब इनसूब्रिया है, अब वो वारेजे में ऑस्पेदाले दी चिरकोलो के अध्यक्ष के रूप में प्रसिद्ध थे।

साफ तौर पर आगे के निवेषण इतालवी पाठकों के लिए समग्र रूप से मजेदार थे, क्योंकि हमारे देश में लागू कानूनों के बारे में जो नागरिक दायित्व को समर्पित था, जिसका आर्थिक संस्कृति के साथ संबंध था। लेखक दृढ़तापूर्वक आश्वस्त था कि पारंपरिक न्यायिक संस्कृति, नागरिक दायित्व के बारे में, और गहन तौर पर अपूर्ण प्रतीत होती है, क्योंकि यह विधि और

अर्थव्यवस्था के बीच के संबंध की उपेक्षा करती है यहाँ तक कि इनकी धारणाओं और समस्याओं में भी।

वो इस अपूर्णता की समस्या के बारे में और भी ज्यादा आश्वस्त थे, मार्च 2007 से मार्च 2008 के बीच ये देखते हुए कि कितने लोगों ने उनकी दो साइटों पर प्रकाशित उनके अभिलेखों को पढ़ा।

मार्च 2007 से मार्च 2008 के काल में वो ना सिर्फ ये निरीक्षण करते हुए आश्चर्यचकित थे कि बहुत सारे लोगों ने इन साइटों को देखा और पढ़ा और परिणामस्वरूप हमारे देश में ऐसे लोगों की संख्या में वृद्धि हो रही थी, बल्कि ये महसूस करते हुए भी जो कि दूसरा अचंभा था विदेशों में भी आर्थिक और न्यायिक संस्कृति का एकीकरण कितना महत्वपूर्ण है।

वो इसलिए **''चुनिंदा कानूनी अभिलेख''** में नागरिक दायित्व से संबंधी अंग्रेजी, जर्मन और स्पेनिश अनुवादों को अपनी साइटों पर एकत्रित करने के लिए आश्वस्त थे और उन्होंने अतिशीघ्र फ्रांसीसी अनुवाद की भी व्यवस्था कर ली है।

इस लेख के अंत में पाठक को ये सभी आंकड़ा ''साख्यिकी'' अनुसूची में मिलेगा।

मार्च 2007 से मार्च 2008 तक के काल को ध्यान में रखते हुए, इतालवी संपर्क 147.769 थे और विदेशी संपर्क, 80 देशों के 38.455 थे।

ये आंकड़े विशाल अंतर्राष्ट्रीय दिलचस्पी की ओर संकेत देते हैं और ये आश्वासन देते हैं कि प्राप्त हुआ न्यायिक ज्ञान आर्थिक स्थिति में अपूर्ण है और इसको आर्थिक ज्ञान के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता है।

विदेशी संपर्कों में वृद्धि उल्लेखनीय है ये ध्यान में रखते हुए कि अनुवादों को पिछले 5 महीनों के दौरान जोड़ा गया है। अत: और वृद्धि की आशा है क्योंकि वो साइटें दशकों तक वैसी ही बनी रहेगी।

यह अभिलेख अनुमानकों के लाभ के लिए न्यायिक और आर्थिक संस्कृतियों के समन्वय के महत्व को सीमाओं के पार तक पहुँचाना चाहता है।

वारेसे, पास्क्वा 2008

इंडिया, रसिया, चीन या अरब देश के पाठक अपने संज्ञान में वृद्धि के लिए इसी लेखक के 'चुनिंदा विधि लेख' का मूल प्रति इतालवी या चुने गये अपने भाषा अंग्रेजी, स्पेनिश, फ्रांसीसी एवं जर्मन में भी मेरे कम्प्यूटर साइट ूणविदकंपवदमहपवअंददपअंसबंअपण्पज या ूणअंसबंअपण्पज से प्राप्त कर सकते हैं। लेखक द्वारा पाठकों को धन्यवाद!

Valcavi.IT (वल्कावी. आईटी) साइट के पिछले 12 महीनों के सारांश आँकड़े

महीने	संपर्क	पेज	आगमन
मार्च 2008	9836	1995	1177
फरवरी 2008	7990	1814	958
जनवरी 2008	8667	2735	799
दिसम्बर 2007	12669	4342	897
नवम्बर 2007	7260	2747	568
ओक्टुबर 2007	6179	2465	591
सितम्बर 2007	4331	1687	431
अगस्त 2007	4244	1798	624
जुलाई 2007	5751	2567	802
जून 2007	4578	1981	805
मई 2007	5402	2058	711
अप्रैल 2007	4849	2011	763
मार्च 2007	5299	2062	868

कुल	87055	30262	9993

fondazionegiovannivalcavi.it साइट के पिछले 12 महीनों के सारांश आँकड़े

महीने	संपर्क	पेज	आगमन
मार्च 2008	18021	2017	709
फरवरी 2008	17043	1815	631
जनवरी 2008	14499	1429	676
दिसम्बर 2007	14817	1503	649
नवम्बर 2007	21987	2452	1222
ओक्टुबर 2007	22710	1950	935
सितम्बर 2007	12591	1392	535
अगस्त 2007	11147	1510	633
जुलाई 2007	14596	1804	822
जून 2007	14752	2173	830
मई 2007	15461	1820	611
अप्रैल 2007	12308	1596	584
मार्च 2007	11587	936	372
कुल	201619	22397	9209

आँकड़ों के लिए:

www.fondazionegiovannivalcavi.it - www.valcavi.it

मार्च 2007 से मार्च 2008 की सारांश अवधि

स्थान	संपर्क	स्थान	संपर्क
इटली	176.863	थाईलैंड	82
व्यावसायिक	29.599	डेनमार्क	111
स्विटज़रलैंड	2.978	ताइवान-तुर्की	91
अमरीका	1.609	संयुक्त अरब	69
मेक्सिको	2.370	इज़राइल	54
अर्जेंटीना	2.223	हांगकांग	149
स्पेन	490	दक्षिण कोरिया	314
एस्टोनिया	32	उरुग्वे	356
जर्मनी	533	लिच्टेंस्टैन	5
विश्वविद्यालय	339	कोलम्बिया	1173
ब्राजील	645	नॉर्वे	27
लातविया	18	इंडोनेशिया	17
आर्मीनिया	3	फ़िनलैंड	18
डोमिनिकन	69	सिंगापुर	28
नामीबिया	3	वियतनाम	63
ऑस्ट्रिया	276	लातविया	14
बेल्जियम	364	अल्बेनिया	109
कनाडा	487	अज़रबैजान	6
चिली	263	आयरलैण्ड	353
चीन	325	अज्ञात	20.629
फ़्रांस	473	सरकारी एजेंसियों	28
क्रोएशिया	21	नेटवर्क	38.096
पोलैंड	304	माल्टा	41
स्वीडन	419	मोरक्को	56
सैन मैरिनो	14	श्रीलंका	4
पुर्तगाल	149	सीरिया	27
नीदरलैंड्स	184	कतर	28
यूनाइटेड किंगडम	518	बुल्गारिया	28

पेरू'	719	बोलीविया	25
बेलारूस	10	जॉर्जिया	4
ग्रीस	131	मलेशिया	2
जापान	45	टुनिशिया	4
स्लोवाकिया	5	वेनेजुएला	25
ऑस्ट्रेलिया	75	लिथुआनिया	3
दक्षिण अफ्रीका	19	ग्वाटेमाला	13
गेनेरिचे	422	मोलडावियन्	19
रूस	368	**अरपानेट**	22
मोनाको	100	पोर्टो रिको	3
हंगरी	67	इक्वाडोर	3
चेक गणराज्य	714	निकारागुआ	2
रोमानिया	478	भारत	1